भण्डारीपन और विशेष कार्य

हिंदी अनुवादक:
पादरी विजय पाल सिंह

पाठ 11 सितम्बर 12, 2026 के लिए

“तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो
कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया,
ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।”
(2 कुरिन्थियों 8:9)

भण्डारीपन उस तरीके को कहते हैं, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति उस वस्तु या जिम्मेदारी का प्रबन्ध करता है जो उसकी देखरेख में सौंपी गई है।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस की दूसरी पत्री के संदर्भ में, भण्डारीपन प्रेरित के एक विशेष कार्य से संबंधित है: गैर-यहूदी कलीसियाएँ यरूशलेम की कलीसिया की सहायता के लिए धन एकत्र करें, जो बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजर रही थी।

कुरिन्थियों ने पहले ही सहायता करने की प्रतिबद्धता व्यक्त कर दी थी, और अब वह समय निकट आ रहा था जब उस प्रतिबद्धता को कार्य में बदला किया जाना था। मकिदुनिया की कलीसियाएँ पहले ही इसमें भाग लेना शुरू कर चुकी थीं। पौलुस की रुचि धन की राशि में नहीं थी, बल्कि उस प्रेरणा और उत्साह में थी जिसके साथ विश्वासी उस अनुग्रह के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करने के इस अवसर में भाग लेते।

भण्डारीपन की उत्पत्ति:
- यीशु का उदाहरण
- प्राप्त अनुग्रह के प्रति प्रतिक्रिया

भण्डारीपन का अभ्यास कैसे करें:
- उचित योजना बनाना
- सही मनोवृत्ति

भण्डारीपन के परिणाम:
- कलीसिया की एकता

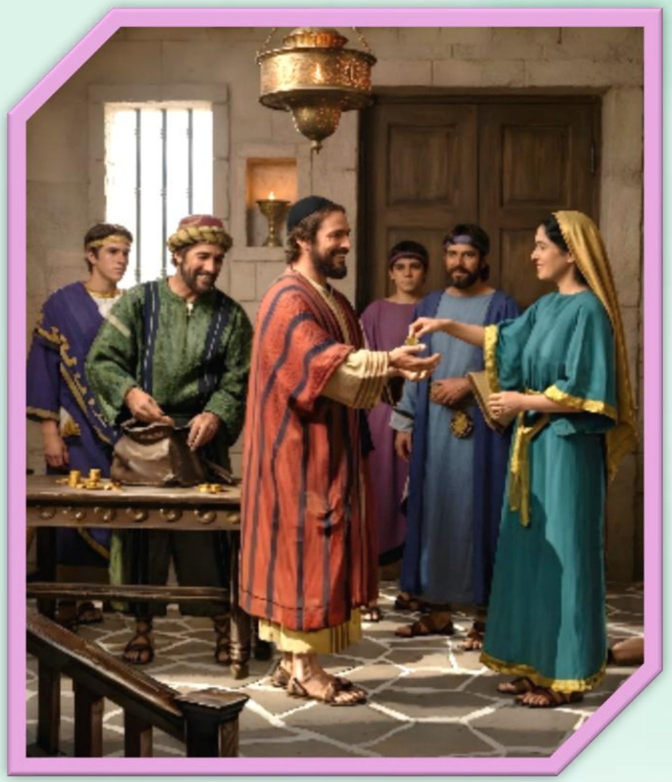

भण्डारीपन की उत्पत्ति

यीशु का उदाहरण

“तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।”
(2 कुरिन्थियों 8:9)

परमेश्वर के अनुग्रह और उदारता के बीच क्या संबंध है? (2 कुरिन्थियों 8:1-2)

परमेश्वर ने मकिदुनिया की कलीसियाओं को अपना अनुग्रह दिया, और वे “बड़ी उदारता से देने के लिए उमड़ पड़ीं” (2 कुरिन्थियों 8:2)। और यह उनके तथा हमारे लिए यीशु का अनुग्रह है:

और उसने यह सब हमारे लिए प्रेम के कारण किया! (यूहन्ना 15:13; इफिसियों 5:2; गलातियों 2:20; 1 यूहन्ना 3:16)

हम यीशु के अनुग्रह के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करेंगे? “तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो” (मत्ती 10:8)।

वह धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल बन गया (2 कुरिन्थियों 8:9)

उसने स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर रहने का जीवन चुना।

उसने ब्रह्माण्ड पर शासन करना छोड़कर बढ़ई बनने का जीवन अपनाया।

उसने सुरक्षित स्थान छोड़कर शत्रु के प्रदेश में रहने का जीवन चुना।

उसने राजमुकुट के बदले काँटों का मुकुट धारण किया।

प्राप्त अनुग्रह के प्रति प्रतिक्रिया

"और जैसी हम ने आशा की थी, वैसी ही नहीं वरन् उन्होंने प्रभु को फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने आपको दे दिया।" (2 कुरिन्थियों 8:5)

अनुग्रह के प्रति मकिदुनिया के विश्वासियों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें:

उन्होंने यीशु का अनुग्रह प्राप्त किया (2 कुरिन्थियों 8:9)

उन्होंने स्वयं को यीशु को समर्पित कर दिया (2 कुरिन्थियों 8:5)

उन्होंने दूसरों की सहायता करने का विशेषाधिकार पाने के लिए विनती की (2 कुरिन्थियों 8:4)

अपने कंगालपन में उन्होंने अपनी सामर्थ्य से भी बढ़कर दिया (2 कुरिन्थियों 8:2-3)

यह हमें क्या सिखाता है?

परमेश्वर के अनुग्रह के लिए कृतज्ञता (2 कुरिन्थियों 9:15)	यीशु ने हमारे लिए सब कुछ दे दिया। हमारी कृतज्ञता इस इच्छा में दिखाई देती है कि हम स्वयं को पूरी तरह उसके लिए समर्पित करें।
परमेश्वर की आशीषों को बाँटने की इच्छा (2 कुरिन्थियों 9:11ए)	हम दूसरों को इसलिए देते हैं क्योंकि हमने पहले परमेश्वर से प्राप्त किया है।
सच्चा प्रेम (2 कुरिन्थियों 8:24)	उदारता इस बात का प्रमाण है कि हमारे हृदय में प्रेम निवास करता है।

भण्डारीपन का अभ्यास कैसे करें

उचित योजना बनाना

"हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।" (2 कुरिन्थियों 9:7)

पौलुस की प्रस्तावित योजना यह थी कि मकिदुनिया और अखाया की कलीसियाओं से (अखाया वह प्रान्त था जहाँ कुरिन्थ स्थित था) यरूशलेम की कलीसिया की सहायता के लिए एक विशेष भेंट एकत्र की जाए (रोमियों 15:26)।

जब प्रेरित ने एक वर्ष पहले कुरिन्थ में इस योजना का प्रस्ताव रखा था, तब इसे उत्साहपूर्वक स्वीकार किया गया था, हालाँकि उस समय कोई निश्चित लक्ष्य निर्धारित नहीं किया गया था (2 कुरिन्थियों 9:1-2)। फिर भी, प्रत्येक सदस्य ने अपने मन में एक निश्चित राशि देने का निश्चय किया (2 कुरिन्थियों 9:7ए)।

भेंट की योजना बनाते समय, प्रत्येक परिवार को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार स्वयं का मूल्यांकन करना चाहिए और यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।

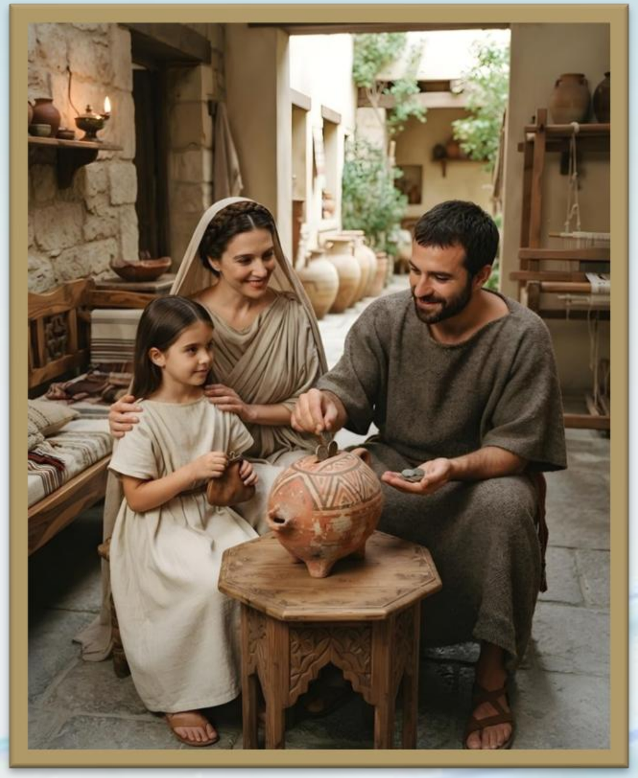

पौलुस ने अपनी योजना में एक और बात शामिल की थी कि उन्हें सब कुछ एक ही बार में देने के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि प्रत्येक सप्ताह थोड़ी-थोड़ी राशि अलग रखनी चाहिए, जब तक कि प्रस्तावित राशि पूरी न हो जाए (1 कुरिन्थियों 16:2)। इस प्रकार, जब पौलुस आए, तो पूरी भेंट को आनन्दपूर्वक एकत्र किया जा सकता था (2 कुरिन्थियों 9:3-5)।

सही मनोवृत्ति

“उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया।” (2 कुरिन्थियों 8:3)

कुलुस्सियों की उदारता को प्रोत्साहित करने के लिए, पौलुस उन्हें मकिदुनिया का उदाहरण देता है। वहाँ की कलीसियाओं में भाइयों ने अपनी भेंट देने में उचित और अनुकरणीय मनोवृत्ति दिखाई, क्योंकि उन्होंने...

आनन्द के साथ दिया (2 कुरिन्थियों 8:2ए)	वे देने में सक्षम होने पर प्रसन्न थे।
उदारता के साथ दिया (2 कुरिन्थियों 8:2बी)	उनका कंगालपन उनके लिए बाधा नहीं बना।
प्रसन्नता के साथ दिया (2 कुरिन्थियों 8:3)	उन्होंने स्वेच्छा और स्वतःस्फूर्त रूप से किया।
एक विशेषाधिकार के रूप में दिया (2 कुरि.8:4)	इस कार्य ने उन्हें परमेश्वर और कलीसिया के प्रति अपना प्रेम दिखाने का अवसर दिया।
समर्पण के कार्य के रूप में दिया (2 कुरि. 8:5)	परमेश्वर के प्रति उनका समर्पण दूसरों के प्रति उनकी सेवा और समर्पण में दिखाई दिया।

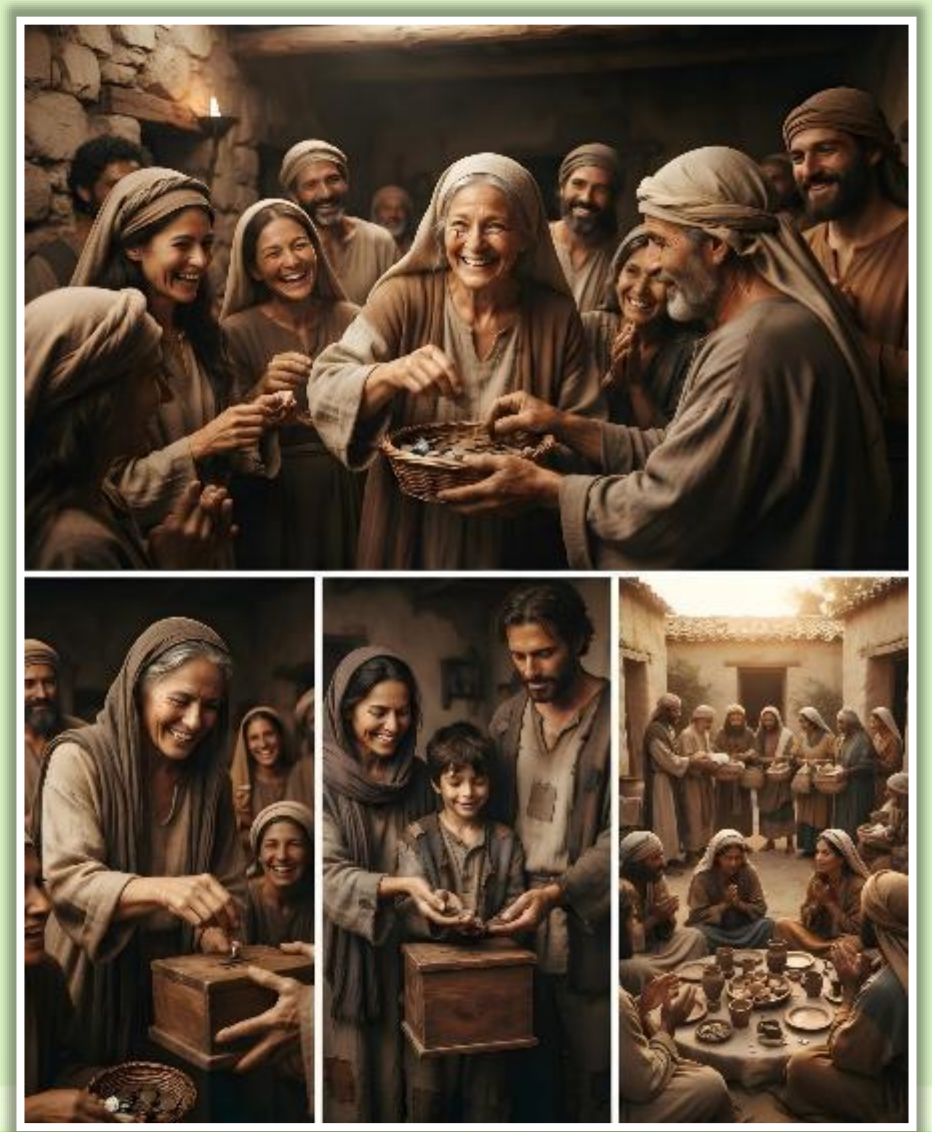

भण्डारीपन के परिणाम

कलीसिया की एकता

“क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से न केवल पवित्र लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का भी बहुत धन्यवाद होता है।” (2 कुरिन्थियों 9:12)

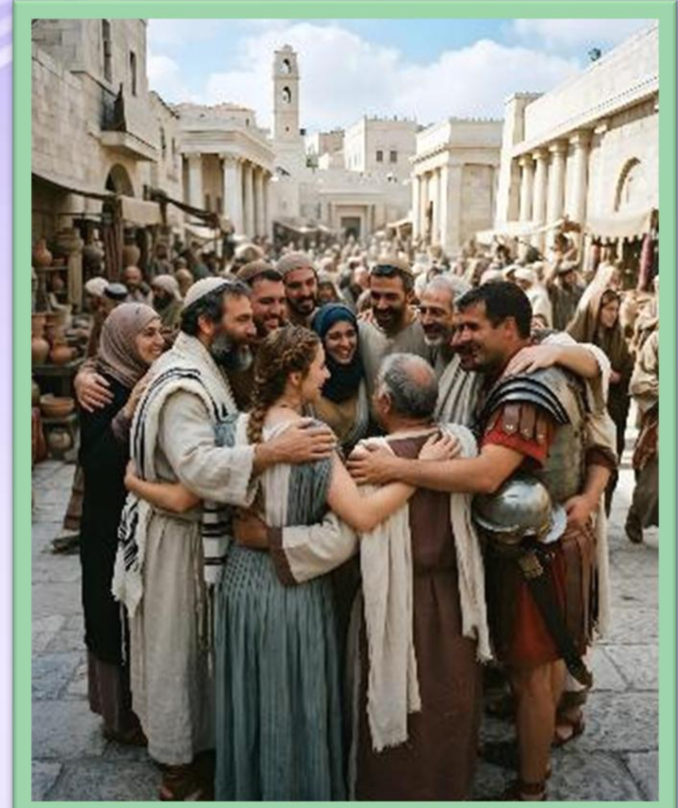

यरूशलेम में पहुँचाई गई भेंट के कुछ अन्य सकारात्मक परिणाम भी हुए (2 कुरिन्थियों 9:12)।

यहूदी और गैर-यहूदी विश्वासी सहायता और कृतज्ञता के बंधनों से एक-दूसरे से जुड़ गए (रोमियों 15:26-27)। इस प्रकार प्रेरित का अंतिम उद्देश्य पूरा हुआ: कलीसिया में एकता।

एक और सकारात्मक परिणाम यह है कि जिस प्रकार भेंट को संभाला गया, उसमें आज हमारे लिए एक विशेष शिक्षा है: सब कुछ व्यवस्थित रूप से और सही प्रक्रियाओं का पालन करते हुए किया जाना चाहिए।

पौलुस ने तीतुस को भेंट एकत्र करने की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया, और कलीसियाओं ने इस कार्य में उसकी सहायता करने के लिए भाइयों को नियुक्त किया (2 कुरिन्थियों 8:16-24)। भेंट को एकत्र करके यरूशलेम भेजने का इससे उचित कोई दूसरा तरीका नहीं था।

“परमेश्वर के कार्य को दशमांश, उपहारों और भेंटों के द्वारा बनाए रखना चाहिए। प्रभु अब उन साधनों की माँग करता है जो उसने अपने भण्डारियों को सौंपे हैं। [...]

प्रभु यीशु अपने अनुयायियों से उससे अधिक कुछ नहीं माँगता जो उसने स्वयं किया है। जो लोग परमेश्वर के कार्य के लिए आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान का अभ्यास करते हैं, वे केवल उसके उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं। उसने अपना राजसी वस्त्र और राजमुकुट उतार दिया और अपने ऊँचे पद से नीचे उतर आया। वह निर्धन हो गया, ताकि उसकी निर्धनता के द्वारा हम अनन्त धन के अधिकारी बन सकें। उसने न केवल अपना धन दिया, बल्कि आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान में अपना जीवन भी दे दिया, ताकि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की खोज करने वालों के मार्ग से हर बाधा दूर कर सके।

[...] प्रभु यीशु हमें अपने साथ सहकर्मी बनने के लिए आमंत्रित करता है। जो कुछ हमारे पास है, वह सब उसका है और उस पर उसका अधिकार है। उसके कार्य में सहायता करने की हमारी तत्परता के द्वारा हम अभी उसके प्रति अपना प्रेम दिखा सकते हैं।”

ई जी व्हाइट (ऊपर की ओर दृष्टि, 9 अप्रैल)